HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-I, (CAUSES OF THE GLORIOUS REVOLUTION)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 72

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

"गौरवपूर्ण क्रांति (1688 ई०) के कारण"

(Causes of The Glorious Revolution)

1688 ई० की राज्य क्रांति का इंगलैंड के इतिहास में विशिष्ट स्थान है। इसे गौरवपूर्ण राज्यक्रांति की संज्ञा दी गई है। परंतु, इस क्रांति का गौरव न तो उसकी घटनाओं में, न उसके दृश्य की नाटकीयता में और न उसके अभिनेताओं की बहादुरी में ही निहित है। क्रांति की महत्ता इस बात में है कि इसमें खून का एक कतरा नहीं बहा और मानव-इतिहास की प्रगति एक विशिष्ट

दिशा की ओर हुई। इस क्रांति के लिए इंगलैंड में कोई गृहयुद्ध नहीं हुआ। जेम्स द्वितीय ने स्वयं अपने हाथों से अनुकूल परिस्थिति को प्रतिकूल बना दिया था। अतः, क्रांति के कारणों का इतिहास बहुत ही पुराना था।

मध्ययुग में राजा प्रशासन के काम में सामंतों से सहायता लेते थे परंतु ट्यूडर-काल में सामंतों की शक्ति पूरी तरह समाप्त हो गई थी। सामंतों के स्थान पर अब राजा पार्लियामेंट के सदस्यों की सहायता से प्रशासन का काम चलाते थे। राजा और पार्लियामेंट के बीच स्टुअर्ट-काल में संप्रभुता का प्रश्न उपस्थित हो गया था। इस प्रश्न पर दोनों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो गई थी। जिससे राजा और पार्लियामेंट का संबंध कटुतर हो गया था।

गौरवपूर्ण क्रांति का कारण:-

ऐसी परिस्थिति में जेम्स द्वितीय का राज्यारोहण हुआ। गद्दी पर बैठने के बाद जेम्स ने ऐसे-ऐसे काम किए, जिससे सभी दल के लोग असंतुष्ट हो गए और सोचने लगे कि राजा स्वेच्छचारी शासन की पुनरावृत्ति करना चाहता है। अतः क्रांति के लिए जेम्स

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

द्वितीय ने स्वयं वातावरण तैयार कर दिया था जिसके कारणों की विवेचना निलिखिखत ढंग से की जा सकता है:-

1. जेम्स द्वितीय कैथोलिक धर्मावलंबी था। वह कैथोलिक धर्म की प्रधानता इंगलैंड में कायम करना चाहता था। उसने टेस्ट एक्ट रद्द कर कैथोलिकों को राज्य के सभी प्रमुख पदों पर नियुक्त कर दिया। धार्मिक वातावरण कैथोलिक धर्म की प्रगति के अनुकल नहीं था। कैथोलिकों के प्रति राजा की विशेष सहानुभूति देखकर जनसाधारण असंतुष्ट हो गया था।

2. जेम्स द्वितीय ने चुंगी वसूलने की आज्ञा निकाली। साधारणतया एक राजा की मृत्यु के बाद पालियामेट चुंगी वसूलने का अधिकार राजा को देती थी। चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के बाद पार्लियामेंट ने चुंगी वसूलने का अधिकार जेम्स द्वितीय को उस समय तक नहीं प्रदान किया था। अतः, जेम्स द्वितीय की घोषणा का पार्लियामेंट ने समर्थन नहीं किया।

3. टेस्ट एक्ट रद्द कराने के उद्देश्य से जेम्स द्वितीय ने न्यायालयों से स्वतंत्र विचार के सभी न्यायाधीशों का हटा दिया और केवल राजा का समर्थन करनेवाले न्यायाधीशों को ही रहने

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

दिया। न्यायिक दृष्टिकोण से राजा का यह काम न्यायोचित और वैधानिक नहीं था।

4. असाधारण न्यायालयों को लॉग पार्लियामेंट द्वारा नष्ट किया जा चुका था और भविष्य में ऐसे न्यायालयों के निर्माण पर प्रतिबंध भी लगा दिया गया था। परंत, जेम्स द्वितीय ने लॉग पार्लियामेंट के विधान की अवहेलना कर एक विशेष प्रकार के धार्मिक न्यायालय की स्थापना की। इस प्रकार के धार्मिक न्यायालय की स्थापना कर जेम्स द्वितीय विरोधियों को दबाकर कैथोलिक धर्म का प्रचार करना चाहता था।

5. जेम्स द्वितीय ने विश्वविद्यालयों के कार्यों में भी हस्तक्षेप किया। उसने ऑक्सफोर्ड के मेग्डेलन कॉलेज के अध्यक्ष पद पर एक रोमन कैथोलिक को बलपूर्वक नियुक्त करने की चेष्टा की। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के सदस्य विशप पार्कर को अध्यक्ष निर्वाचित नहीं करना चाहते थे, अतः विरोधी सदस्यों को धार्मिक न्यायालय के आज्ञानुसार निकाल दिया गया, जिससे जनता में क्षोभ उत्पन्न हो गया।

Dr Gulab Kumari (A.N.D College)

6. 1687 ई. में जेम्स द्वितीय ने विवेक की स्वतंत्रता (Liberty of Conscience) की घोषणा की। इस घोषणा का एकमात्र उद्देश्य था कैथोलिकों को मुक्ति दिलाना। कैथोलिकों और डिसेंटरों से प्रतिबंध उठा लिया गया। चार्ल्स द्वितीय कैथोलिकों का उद्धार करने के प्रश्न में पहले ही असफल हो चुका था। उसे धार्मिक अनुग्रह की अपनी घोषणा पार्लियामेंट के विरोध के परिणामस्वरूप वापस ले लेनी पड़ी थी, अतः जेम्स द्वितीय का प्रयत्न भी स्वाभाविक रूप से असफल रहा और वह विरोधियों का समर्थन प्राप्त नहीं कर सका।

7. पहली भूल से सबक लेने की चेष्टा जेम्स द्वितीय ने नहीं की। 1688 ई० में उसने पुनः धार्मिक अनुग्रह की घोषणा की। इस बार सभी पादरियों को आदेश दिया गया कि वे घोषणा के अनुसार पूजा-पाठ करें। विरोध करनेवाले पादरियों को वह विशेष धार्मिक न्यायालय में दंड देने लगा। राजा की घोषणा का विरोध कैंटरबरी के आर्कबिशप और छह पादरियों ने किया। उनपर अभियोग लगाया गया, परंतु न्यायाधीशों ने पादरियों को निर्दोष घोषित किया। इस घटना से जेम्स के प्रति जनसाधारण का आक्राश बढ़ा और उसने लोकप्रियता खो दी।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

8. जेम्स द्वितीय पार्लियामेंट के चुनाव में हस्तक्षेप करने लगा। चुनाव के प्रश्न पर जेम्स प्रथम के समय में ही पार्लियामेंट विजय प्राप्त कर चुकी थी, परंतु जेम्स द्वितीय ने स्वयं अपने अधिकार की सीमा का अतिक्रमण कर अनावश्यक रूप से संसदीय चुनाव में हस्तक्षेप कर लोकप्रियता खो दी।

9. जेम्स द्वितीय पार्लियामेंट के सदस्यों को भी नामजद करने लगा। वह अपने समर्थक पार्लियामेंट में बढ़ाना चाहता था। राजा के प्रयत्न से पार्लियामेंट के सदस्य आतंकित हो गए।

10. जेम्स द्वितीय के कोई पुत्र नहीं था। लोगों का विश्वास था कि जेम्स की मृत्यु के बाद गद्दी का निकटतम उत्तराधिकारी विलियम ऑफ ऑरेंज होगा, जो प्रोटेस्टेंट था, परंत जेम्स की द्वितीय पत्नी से पुत्र उत्पन्न हुआ, तब लोगों के आशा पर पानी फिर गया। कैथोलिक राजा का पुत्र कैथोलिक ही होता और वह भी पिता के पदचिह्नों पर ही चलता, इस बात की आशंका से लोगों का रहा- सहा धैर्य टूट गया। अब वे क्रांति के द्वारा ही कैथोलिक शासकों के नियंत्रण से अपने को मुक्त कर सकते थे।

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

11. जेम्स ने टेस्ट ऐक्ट को खत्म कर दिया। टेस्ट ऐक्ट रद्द करने के साथ-साथ उसने यह भी घोषणा की कि वह किसी भी कानून को रद्द कर सकता है और कोई भी नया कानून लागू कर सकता है। इसका अर्थ यह हुआ कि विधि-निर्माण के मामले में राजा ही सर्वोपरि है, परंतु पार्लियामेंट इसे स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं थी।

12. जेम्स द्वितीय ने इंग्लैंड के अतिरिक्त आयरलैंड और स्कॉटलैंड के कैथोलिकों के प्रति भी विशेष सहानुभूति दिखाई। जेम्स की पक्षपातपूर्ण नीति के फलस्वरूप कैथोलिकों का हौसला बढ़ा और अन्य स्थानों से कैथोलिक आकर इंगलैंड में बसने लगे ऐसा दिखाई पड़ने लगा कि इंगलैंड अब कैथोलिकों का अड्डा बन जाएगा।

13. विरोधियों का मुकाबला करने के लिए जेम्स द्वितीय ने एक बहुत बड़ी सेना संगठित कर ली थी। सैनिकों में अधिकांश कैथोलिक लोग ही थे। स्थायी सेना रखने की परंपरा इंगलैंड में उस समय तक विकसित नहीं हो पाई थी। खतरा इस बात से था कि जेम्स ने सेना का संचालन कैथोलिकों के हाथ में सौंप

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

दिया था। राजा के व्यवहार से जनसाधारण में असंतोष का भाव जाग्रत हो गया।

विरोधियों के साथ जेम्स द्वितीय क्रूरता से पेश आता था। 1685 ई० में मन्मथ के विद्रोह को निर्दयतापूर्वक दबाया गया। उस विद्रोह में लगभग तीन सौ व्यक्तियों को प्राणदंड मिला और आठ सौ व्यक्ति निर्वासित हुए। राजा की क्रूरता से सभी आतंकित हो गए और वे सोचने लगे कि जेम्स द्वितीय अपने पूर्वजों की तरह ही निरंकुश शासक बनना चाहता है अतः, सभी दलों के प्रमुख प्रतिनिधियों ने आरेंज के राजकुमार विलियम को इंगलैंड में पोपमत को जड़-मूल से नष्ट करने के लिए निमंत्रित किया। अँगरेजों को अँगरेजी-चर्च और प्रोटेस्टेंट-मत अधिक प्यारा था। वे निरंकुश शासन के चंगुल से ईंगलैंड को मुक्त करना चाहते थे।

इंगलैंड के लोगों का निमंत्रण पाकर विलियम लंदन आया। जेम्स द्वितीय फ्रांस भाग गया। राजा के भाग जाने से गद्दी खाली हो गई। कन्वेंशन पार्लियामेंट की बैठक में विलियम और मेरी को सम्राट और सम्राज्ञी घोषित किया गया। भविष्य में इंगलैंड को सरकार की रूपरेखा निर्धारित करने का अधिकार-संबंधी कई

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)

विधेयक स्वीकृत हुए। उन विधेयकों की कार्यवाही देखकर ही 1688 ई० घटना को गौरवपूर्ण क्रांति की संज्ञा दी गई है।

धन्यवाद

Dr Guddy Kumari (A.N.D College)